संवेदन कल्चरल प्रोग्राम
पेश करता है

पीडित समुदायना स्वानुभवों पर आधारित
फोरम नाटक

'गुजरात –2004'

(गीत)

(सभी कलाकार गुजरात के परंपरागत गरबा की स्टाईल में गरबें घुमते हुए गीत गाते हैं।)

हिन्दु या मुसलमाँ, सिख है, ईसाई है या पारसी है हम
प्यार से, ऐतबार से, आज से कहे इन्सान है हम
यहूदी है, बुद्ध है, जैन है, आस्तिक या नास्तिक है हम
चार हों या हजार हों मिल के कहें इन्सान है हम।
हिन्दु या मुसलमाँ.....

ना चंदा पर, शनि पर, शुक्र पर, ना सुरज पर, तारों पर, मंगल पर
ना और है कही ऐसी सुंदरता, ज़िन्दगी है अपनी ही धरती पर
राज की ये बात है, जिन्दगी जीये इन्सान है हम।
यहुदी है, बुद्ध है.....

बरसोंबरस पहले धरती थी चूप, खिल आई धीरे से ज़िन्दगी बहूत
कुदरत की महेनत करोडों बरस, इन्सा बना जिससे सुंदर बहोत
एक भी, हम अनेक भी, इस लिए कहे इन्सान है हम
हिन्दु या मुसलमाँ.....
हम मस्जिद में जाये या मंदिर में, हम गुरुद्वारे जाये या गिरजे में
हम अगियारी जाये या देरासर, एक ही आरजू हर दिल में
प्रार्थना दुआ एक है, शांति से रहे इन्सान है हम।
यहुदी है, बुद्ध है.....

दृश्य –1

(अहमदाबाद की चाली में रहनेवाले एक दलित परिवार की माँ–लड़की अपना काम कर रही है। काम करते हुए माँ दर्शकों से बात करना शुरु करती है।)

माँः क्या देश रहे है आप लोग? मुझे या मेरे घर को? खैर अब आप आ ही गये है तो मैं आपको अपने बारे में बताउं।

(अतीत में चली जाती है।) मुझे वो दिन आज भी अच्छी तरह से याद है। आज से तीन सालपहले। बहार दंगे जोर–शोर से चल रहे थे। इन्सान इन्सान को जिन्दा काट रहा थां बहोत ही भयानक रात थी वो। (अचानक शंकर की याद आती है।)

मेरा बेटा! यू तो मेरा बेटा शंकर जल्दी घर लौट आता था। लेकिन उस रात हम उसका इन्तज़ार करते थे और वो रात को ग्यारह बजे आया।

(शंकर का आगमन)

शंकरः माँ..... माँ.....

माँः अरे शंकर आ गया मैं कब से तेरी राह देख रही हूँ।

शंकरः माँ, तुम को पता तो है बाहर कितना दंगा चल रहा है, यु मुसलमान साले सुधरेंगें नहीं.... सालों को पाकिस्तान भगा देना चाहिए। नाक में दम कर दिया है सालों ने।

माँः अरे बेटा! गुस्सा थूंक भी दे..... तु खाना खा।

शंकरः खाना भी हराम कर दिया है। तुझे पता है, हर जगह आज–कल मिटिंगें हो रही है। मैं एक भी मिटिंग में जा नहि पाया।

माँः अच्छा, तु पहले खाना खा ले! दुनिया की चिन्ता छोड़।

(हिन्दुत्ववादी गुडे का आगमन)

हिन्दुत्ववादी गुंडाः क्या शंकर क्या कर रहा है। ओ खाना खा रहा है। बहार दंगा चल रहा है और तु यहां आराम से खाना ख रहा है। वो प्रविणभाई बोल रहे थे कि शंकर को लीडर बना के बड़ी गलती कर दी है। साला एक भी मिटिंग में भी अया नहि। भाई तेरे जैसा मुझे भी घरबार है, बीवी–बच्चे हैं। सब है, मगर पहले धरम बाकी सब बाद में। तुजे पता है वो सोलंकी को जिन्दा काट डाला सालों ने।

शंकरः क्या बात कर रहे हो? काट डाला!

गुंडाः अबे छत्तीस टुकड़े किये थे। छत्तीस! तू साला आराम से खाना ख रहा है। कैसा हिन्दू है तू। देख प्रविणभाई ने बोल दिया है, आज किसी को छोडने का नहि। आज तो सालों को घर से बाह निकाल–निकाल कर मारना है। देख सबसे बात हो गई है। लिस्ट भी तैयार है, सब वहां बाहर इकट्ठा हो गये है। तेरे पास जो भी हथियार है लेके आ जा फटाफट! आज एक भी बच पाना नहि चाहिए!

शंकरः हा, महेन्द्रभाई, बस आप लोग निकलों मैं आया हि समजो।

गुंडाः हा, जल्दी निकल मैं बाहर खडा हूं। (जाता है)

गीता(बहन): अरे, ये क्या तमाशा बना रख है! और ये क्या आया–आया कर रख है। माँ इसे कुछ समझा! अने ये खुद तो बिगडे हुए लफंगे है और भाई को बिगाडेंगें।

मांः देख बेटा, तु कहीं नहीं जायेगा।

शंकरः नहि, माँ, मुझे जाना ही पडेगा।

माँः देख शंकर मेरी बात सुन.... अरे सुन बेटा.....

(शंकर हथियार निकाल कर चला जाता है।)

(माँ अपने अतीत से बाहर आ जाती है। पुनः दर्शकों से)

माँः इस तरह मेरा बेटा शंकर चला गया। कभी ना वापस लौटने को। गया था दो पैरों पर, पार आया.... चार कंधों पर, मर गया था मेरा बेटा। साँसें रूक गई थी उसकी, उसकी साँसें क्या रूकी.... हमारी तो जिन्दगी ही रूक गई।

(अपनी जवान बेटी की ओर देखते हुए)

ये मेरी बेटी! बाहर काम की तलाश में जाती है। तो लोग गिध्ध की तरह मंडराने लगते है उसकी ओर। और मैं, मैं तो बूढी हो चली! काम कौन देगा?

(तभी चार आदमी आकर खडे हो जाते है, जो शंकर को अपने साथ ले गऐ थे)

पर ये लोग, इन्होंने कहा था तुम्हारी मदद करेंगें, तुम्हें पैसे देंगें, पर आजतक कुछ नही किया इन लोगों ने, कुछ नहीं।

(तभी बस्ती का एक युवान खडा हो जाता है। पहले हिन्दुत्ववादी गुंडों को देखकर, फिर दर्शकों से)

युवक–1: ऐसा किसी एक घर के साथ नहीं हुआ। कई घरों के साथ, कई घरों के साथ हुआ है। मेरे घर पे भी आये थे – ये लोग मेरे पापा को ले गये, बहोत शराब पिलाई और शराब के नशे में न जाने कितने बेगुनाह लोगों को मरवा दिया। शाम को जब पापा घर आये तब उनके कपड़ों से खून की बदबू आ रही थी। हमने दो दिन तक उनसे बात नहीं की, तीसरे दिन जब मैं पापा को खाना देने गया तो..... तो..... मैंने देखा कि पापा ने खुदखुशी कर ली है.....

युवक–2: आज दंगों को बीते पूरे तीन साल गुजर गये! लेकिन हमारे पास कुछ भी काम नहीं।

युवक–3: ये किसी एक घर की बात नहीं, कई घरों की बात है।

लड़कीः इन दंगों से गरीब को क्या मिला?

मजदूरः इन दंगों से ना ही हमें रोटी मिली, ना ही कपड़ा, ना ही मकान.....

युवकः क्या? हम हिन्दु या मुसलमान ही है मजदूर या किसान नहीं?

(सब एक साथ)

सबः हमें जवाब चाहिए।

दृश्य–2

(कलाकार चुने गए गीत की धून गाते हुए बिखर जाते हैं। एक थका निराश आदमी दर्शकों से।)

नुरूभाईः सवाल है आप सब की आंखों में, सवाल है। सब की आंखें खुली है सब कुछ देख रही है फिर भी खामोश है। थक गया हूं मैं। पीछले कई दिनों से मैं काम की तलाश में यहां–वहां भटक रहा हूं, पर कही भी काम नहीं मिलता। क्योंकि मैं मुसलमान हूं। इसी लिए मेरे मालिक ने मुझे काम से निकाल दिया। पीछले कई दिनों से मैं अपने घर नहि गया। मेरे घर में मेरी बीवी और मेरे दो बच्चे अकेले हैं। छोटा बेटा सलीम, उसे पेइन्टींग का बडा शौख़ा है, एक दिन उसने एक पेइन्टींग बनाइ। जिसमें बहती नदियां थी, मैंने पूछा, बेटा तुने ये नदियां क्यूं बनाई? तो बोला,

पापा! पापा! ये बहती नदियां में है ना, सबको पानी देती है, वो हिन्दुओं के गांवों से बहती है और मुसलमानों के भी, सबको पानी देती है।

बस उसकी यही बात से तो मैं आज तक जिन्दा हूं। आज, कई दिनों के बाद मैं अपने घर जाउंगा।

(सब कलाकार धून गाते–गाते लकड़ी के घर बनाके एक मुस्लिम बस्ती बना देते है और अपने अपने काम में जूट जाते हैं। वहीं नुरूभाई आते है।)

नुरूभाईः समीर.... बेटे समीर, देख बेटा अब्बु आ गये।

(नुरभाई को देख कर बस्ती के लोगों में अजब सा सन्नाटा छा जाता है।)

नुरूभाईः जी सूनती हो.... समीर कहा है?

(प्रतिउत्तर नहि मिलता। बेटे से)

बेटे तु तो बता, तेरा छोटा भाई कहाँ गया? समीर कहाँ है?

इमरानः अब्बु पिछले तीन–साल से आप यही सवाल कह रहे है। आपको कितनी बार बताया कि.... अब तो हमारे पास समीर की यादें ही है। फिर भी आप बार बार क्यूं.... समीर अब हमारे बीच नहीं है..... (नदियां का पेइंन्टींग ले आता है।)

(नुरूभाई समज जाते है। वो टूटकर बिखर जाते है।)

(सभी कलाकार धून गाते–गाते नये दृश्य में आ जाते है।)

दृश्य –3ः

(फोन पर वकील से बात करते हुए)

राजुभाईः हलो, हां वकील साहब, मैं राजु बोलता हूं। क्या हुआ हमारे वो गेंग रेप वाले केस का? (फोन पर एक तरफा बात है।) क्या कहां? इस हप्ते में ही रेहाना का केस हियरिंग मे आ रहा है। अरे ये तो अच्छी खुशखबरी है। वकील साहब आपको मालूम है। अगर ये केस हमज ीत गये तो और लड़कियां भी केस करने तैयार हो जायेगी। जिसके उपर बलात्कार हुआ है। अरे वकील साहब उन लोगों को जरूर सजा मिलनी चाहिए। उन्होंने छोटा मोटा गुना नहीं किया, सामुहिक बलात्कार करके एक लड़की की जिन्दगी उजाडी है। उन्हें सजा जरूर दिलाओ।

(उत्कृष्टता से –शिल्पा से)

शिल्पा..... ओ शिल्पा कहां गई? तुम्हारे लिए खुशखबरी है।

शिल्पाः क्या हुआ? क्या बात है?

राजुः वो अपनी रेहाना है ना? उसका केस पांच –छ दिन के बाद ही हियरिंग में आनेवाला है।

शिल्पाः सच! तुम सच कह रहे हो?

राजुः हा, शिल्पा, अगर हम ये केस जीत जाते है तो ओर भी लड़कियों को हिंमत मिल जायेगी। जिसके उपर सामुहिक बलात्कार हुआ है। उनको जरूर सजा मिलनी चाहिए।

शिल्पाः राजु, तुम्हें तो एक बात बताना भूल ही गई। पता है, मैं कल ही वटवा के केम्प में गई थी, वहां पर ओर पांच लड़कियां तैयार हो गई केस करने को।

राजुः ये तो बहोत ही अच्छा। इस तरह लड़कियां तैयार होती तो उन लड़कियों को न्या मिलेगा ही मिलेगा। शिल्पा..... तुम कल शाम को रेहाना के साथ वकील साहब के पास उनके ऑफिस चले जाना और हा, उनके अब्बु को भी साथ ले जाना।

शिल्पाः राजु रेहाना बाहर ही है, बुलाउ उसे?

राजुः अरे हां, बुलाओ उसे।

शिल्पाः रेहाना..... रेहाना....

(रेहाना अंदर आती है और शामिल हो जाती है।)

रेहानाः तुमने बुलावाया।

शिल्पाः रेहाना तुम्हारे लिये खुशखबरी है अभी–अभी वकील साहब का फोन आया और वा कह रहे थे कि पांच–छ दिन में ही तुम्हारे केस की सुनवाई होगी।

रेहानाः सच....?

राजुः सच.... एकदम सच। अभी–अभी वकील साहब से फोन पर बात हुई है और वो कह रहे थे कि कुछ ही दिन में तुम्हारा केस हियरिंग में आने वाला है और तुम्हें वकील साहब से मिलने जाना है। शिल्पा तुम्हारे साथ आयेगी और हां..... तुम्हारे अब्बु को भी साथ ले जाना।

रेहानाः मुझे पता था कि मुझे एक दिन इन्साफ जरूर मिलेगा। मैं कल वकील साहब से मिलने जरूर जाउंगी और केस जीत के दिखउंगी।

(इस तरह लोग गाना शुरू करके खडे हो जात सर्कल में घूमते है और अपना–अपना घर बना के घर का काम करने लगते है, तभी हिन्दुत्ववादी गुंडा आता है।)

गुंडाः ए..... वो इकबाल इसी चाल में रहता है क्या?

व्यक्ति–1ः हा..... वहां पिछवाड़े में उसका घर है।

गुंडाः क्या वो दिखाई देता है वही है....

व्यक्ति–1ः हा..... वही है।

गुंडाः तो शांति से बोला सबकुछ सुनाई देता है इधर। साला हरामी.....

(गुंडा जाते हुए –बीच में एक लड़का खेलते हुए दिखई पड़ता है। गुंडा उस लड़के के सामने देखता है। लड़का डरता हुआ घर की ओर भागता है।)

लड़काः अम्मा..... अम्मा.... गुंडा आया। अम्मा ध्माल मालेगा मालेगा.... अम्मा.....

अम्माः क्या हुआ बेटा, कुछ नहीं है..... कुछ नहीं है.....

गुंडाः अरे ए.... वो क्या पागल है...?

व्यक्ति–1ः हा, जब 2002 में दंगे हुए तब उसे बहुत पीटा था। बहोत मारा था और जब भी इस भगवे कलर को देखता है तो डर जाता है.....

(गुंडा वहां से चलता हुआ इकबाल के घर की ओर चलता है।)

गुंडाः इकबाल..... ओ इकबाल, तेरा ही नाम इकबाल है ना?

(इकबाल मुंह हिलाकर हा कहेता है।)

वो रेहाना तेरी ही लड़की है ना? उसने केस किया है, तो बोल उसे की केस वापिस ले ले।

इकबालः वैसे भी केस करेंगें तो कुछ भी मिलने वाला नहीं है। क्यूं कि सबकुछ बिका हुआ है इस देश में, सब कुछ।

गुंडाः देख भाई, ये देश हमारा है, सरकार हमारी है, उपर से नीचे तक पुलिस हमारे हैं। अरे, तुम्हें इन्साफ कौन देगा? बोल तेरी बेटी को कि केस वापिस ले ले।

इकबालः हमें पता है सब कुछ तुम्हारा है इसी लिये इतनी बेरहमी से हम लोगों को मारा गया है....

गुंडाः देख भाई, एक बार बोल दिया ना कि केस वापिस ले ले। अरे, तुम लोगों को इस देश में रहेना है ना, तो हमारो छोटे भाई की तरह रहो वरना निकल जाओ अपने देश....

इकबालः कौन सा देश? हमारा कोई देश नहीं है। अरे वह तो हमने गलती की कि सन 1947 के दंगों में चले नहीं गये। हमारा कोई देश नहीं है।

गुंडाः देख भाई, तु अपनी बेटी को बोल अपना केस वापिस ले ले। मैं तुम्हें दस लाख रूप्ये दुंगा। तु बोल अपनी बेटी को कि केस वापिस ले ले।

(इकबाल सोचते हुए)

इकबालः आप? आप। हमें दस लाख रूपये देंगें!

गुंडाः हा। मैं तुझे दस लाख रूपये दुंगा। अरे, फिर तु अपनी बेटी की शादी करवाना। अरे कहीं जाके अच्छा घर ले ले ना। अरे, तुम्हें क्या फिकर हैं? दस लाख दे रहा हूं ना। अच्छा तो, कल, परसो आ रहा हूं। बोल देना तेरी बेटी को कि केस वापिस ले ले।

(थोडे दूर जाते हुए)

वरना.....

(बस्ती में सारे लोग चूप रह जाते हैं। सब डरते हुए। इकबाल के घर आते हैं।)

व्यक्ति–1: सलाम–वा–लेकुम, इकबालभाई, ये कोण था, इकबालभाई? देखो, ये केस–बेस के लफडों में मत पडियो। कई होने वाला नहीं है। कल उठके तुम्हारे को समाज में मूंह दिखलाने का है, कल उठके तुम्हारी छोकरी की शादी भी करने की है तमारे कु। आ सनस्था वाले तो, बधा अपने मतलब के लिए करते है। बाता करेंगें मोटी–मोटी कै देणे का नई है।

व्यक्ति–2: देखो, इकबालभाई इस केस–बेस से कुछ होने वाला नहीं है, मैं तो कहेता हुं कि इस इस केस–बेस के लफडों में मत पडियों आप, कुछ इन्साफ – मिलने वाला नहीं है। देखो, ये जहीरा उसने केस किया था क्या मिला उस, कुछ मिलने वाला नहीं है।

(तभी रेहाना आती है – उसे देखकर)

लो, आ गयी आपके बेटी समजाईए इसको कि ये केस–बेस के लफड़ों में ना पडे, हमारे लिए आफत खडी हो जायेगी, अगर केस करना है तो चाली के बाहर जाके केस लडीये नही ंतो तुम्हारे साथ–साथ हमें भी भुगतना पडेगा।

(व्यक्ति –2 चला जाता है।)

व्यकित–1: इकबालभाई, एक पडोशी होने के नाते हमें जो कहेना था वो मैंने कह दिया, आगे तमारी मरजी (व्यक्ति–1 खडा होता है) अरे, रहिम चाचा, राहत का खट्टारा आवे तो बुलाईयो मुझे, आज बर्तन देने के है।

(रेहाना अपने घर के तरफ बढती – अपने अब्बु इकबालभाई के साथ बात करने लगती है।)

रेहानाः अब्बु, अब्बु, हमने जो केस किया था उसकी सुनवाई होनेवाली है कोरट में।

(इकबाल अपना मुंह फेर लेता है –रेहाना दुबारा उत्साहित होकर)

अब्बु, सनस्था वाले भाई ने कहा है कि तू अपने अब्बु को साथ लेकर कोरट में जाना। वकील साहब से मिलना है।

इकबालः किसी से नहीं मिलना मुझे, किसी के साथ बात नहीं करनी।

रेहानाः पर, अब्बु आपको तो मेरे साथ आना होगा।

इकबालः कहीं नई आना मुझे। कह दिया ना तुझे।

रेहानाः अब्बु हमें हमारे हक्क के खातिर लड़ना होगा।

(तभी इकबाल खड़ा हो जाता है।)

इकबालः क्या करेंगें लडके? बता बेटी क्या करेंगें लडके? इन बुढ्ढी हड्डियों में ताकत नहीं है। उन जालिमों के सामने लडने की, सब कुछ बिका हुआ है इस देश में सब कुछ बेटी, तू अपना केस वापिस ले ले।

रेहानाः पर अब्बु, मैं ही केस वापस ले लूंगी तो दूसरी लड़कियां कहां से लड पाएगी?

इकबालः बेटी ये केस–बेस करने से कुछ हासिल नहीं होने वाला, कुछ दिनों तक अखबारों में फोटो छपेंगें, बाद में सब भूल जाते है, ओर फिर हमें तो जिंदा रहना है – फिर तुम्हारी

शादी भी तो करनी है। ये केस–वेस के लफड़ों में पडेगें तो जिंदा नहीं रह पायेंगें हम। बेटी तू अपना केस वापिस ले ले, वरना तू अपने बाप का मरा हुआ मूंह देखेगी।

रेहानाः पर अब्बु, मैंने जो कुछ भुगता है उसके लिए तो मुझे न्या चाहिय।

इकबालः तुझे तेरा बाप चाहिय या न्याय?

(रेहाना अपने बाप के सामने झुक जाती है – दूसरी ओर इकबाल को भी इसी बात दुःख और दर्द है – तभी दो व्यक्ति इकबाल को दो और से खींचने लगते है!) (ओर पीछे दो व्यक्ति एक गुंडा ओर पुलिस वाला फोन पर बात करते है।)

गुंडाः हलो.... इन्स्पेक्टर साहब वो इकबाल ने केस वापस ले लिया क्या?

पोलीसः हां..... हां.... बहोत परेशान कर रहा था।

गुंडाः अब कोई परेशानी नहीं होगी साले। उसको कह कर आया हूं कि केस वापस ले ले। ओर तुम लोगों को इस देश में रहना है तो हमारे छोटे भाई बन के रहना होगा। निकल निकल जाओ अपने देश....

(दोनों हंसते हुए अपनी बात जारी रखते है।)

पोलीसः हां..... हां पर हां साहब हमारा कुछ.....

गुंडाः अरे साहब जब तक हम है तुम को क्या फिकर, आप को फिकर आपका हिस्सा आपको मिल जायेंगा। चलो जय श्री राम....

(पुलिसवाला और हिन्दुत्ववादी गुंडा खील–खीलाकर हंसते हंसते हाथ–मिला लेते है वही फ्रिज हो जाते है।)

(कलाकार गीत की धून गाते–गाते लकड़ी से लकड़ी से घर बनाके एक बस्ती बनाते है और अपने अपने काम में जूट जाते है।)

दृश्य –4

(रिक्षाचालक की पत्नी अपना घरेलु काम करती है और दर्शकों को देखकर)

शबानाः क्या देख रहे है आप? मैं खाना पका रही हूं क्या आपके घर में खाना नहीं पकता? मैं शबाना। मेरा घरवाला रिक्षा ड्राईवर है। हम लोग अहमदाबाद के शाह आलम में रहते है। (चिंता से) रात के ग्यारह बज चूके है अभी तक आये क्यूं नहि? कही बाहर कुछ हुआ तो नहि होगा।

(तभी बस्ती में एक हिन्दुत्ववादी गुंडा आता है और शबाना के घर का दरवाज़ा खटखटाता है।)

मुन्नाः सलीमभाई घर में है?

शबानाः नहीं है।

मुन्नाः आये तो बोलना मुन्ना आया था। अभी आता हूं थोडी ही देर में।

शबानाः मुन्ना? ये मुन्ना कौन है? (मन में बबडती है।)

सलीमभाईः (रिक्षा की आवाज होती है। सलीम घर का दरवाजा खटखटाता है और शबाना दरवाज़ा खोलती है।)

सलीमः अरे जरा पानी देना। (शबाना पानी ले आती है।)

शबानाः (अधीराई से) आज आप को इतनी देर क्यूं हुई?

सलीमः क्या बताउं आज तो एक बहोत ही भला पेसेन्जर मिल गया था। गुप्तानगर का। बिचारा किराये से बीस रूपये ऐसे ही ज्यादा देकर चला गया। बहोत ही भला आदमी था।

शबानाः (डर से) अरे बाप गुप्तानगर गये थे? आपको कितनी बार मना किया है कि आप ऐसे इलाके में मत जाये। फिर भी आप चले जाते है।

सलीमः देखो तुम जानती हो। वैसे ही लोग दाढी देखकर ही रिक्षा से दूर चले जाते है और फिर पेसेन्जर जहां जाना चाहता है वहां छोडना तो पडेगा ही। तुम क्या जानो आज के दौर में सो रूपया कमाना कितना मुश्किल है।

शबानाः अरे आपको कमाई की पडी है। एक दिन घर पर रह कर देखिये। कितनी चिंता होती है।

सलीमः अरे! तुमको सिर्फ घर पर बैठे बोलना है। अगर रिक्षा नही चलाई तो किराया कैसे देंगें। खाने की भी वांदे पड जायेंगें। चलो खाना लगाओ। मुझे बेकार कि बातों में मत उलझाओ।

शबानाः (खाना ले आती है और अचानक याद आता है।) अरे! कोई मुन्नाभाई आये थे। कह रहे थे सलीमभाई आये तो कहना मुन्ना आया था।

सलीमः (आश्चर्य से) मुन्ना? ये मुन्ना कौन है? मैं किसी मुन्ने को नहीं जानता।

(उतने में ही दरवाजा खटखटाता है।) (मुन्ने का प्रवेश)

मुन्नाः सलीम है घर में?

शबानाः हां..... है।

मुन्नाः बोलो कि मुन्ना आया है।

शबानाः देखिये वो मुन्ना आया है। मुझे तो वो आदमी ठीक नहीं लगता।

सलीमः अरे! तो उसे अंदर बुलाओ.... (शबाना पानी ले आती है। मुन्ने को देती है लेकिन मुन्ना पानी नही लेता।)

मुन्नाः सलीमभाई आप ही है।

सलीमः हां जी..... आईये बैठिये। माफ किजीये आपको मैंने पहचाना नहीं।

मुन्नाः मैं वो लालिये का भाई हूं। वो 302 का वाला। वो बता रहा था। दो दिन पहले आप मणिनगर गये थे और अभी गुप्तानगर।

सलीमः हां तो उसमें बुरा क्या है?

मुन्नाः बुरा है। देखो सलीमभाई मैं आपको बोल देता हूं आप अपने एरिये में धंधा करें हमारे एरीये में क्यूं करते है धंधा?

सलीमः ये आपका एरीया..... हमारा एरीया.... कुछ समजा नहीं मैं?

मुन्नाः देखो मैं समजाता हूं। कालुपुर, जुहापुरा, जमालपुर, दरियापुर, खानपुर ये सब तुम्हारा एरीया है। और ये मणिनगर, गुप्तानगर, नवरंगपुरा, सेटेलाईट ये सब हमारा एरीया है तो आप अपने एरीये में धंधा किजीये क्यूं आते है हमारे एरीये में।

सलीमः देखो तुम तो जानते ही हो। अगर गड्डी लेने में खडी रखते है, तो पेसेन्जर जहा जाना चाहेगा उे ले जाना होगा। नहीं ले जाते तो पुलिसवाले परेशान करते है और आज आप इस शहर को भी दो हिस्सों में बांटना चाहते है?

मुन्नाः देखो सलीमभाई, अगर आप मेरी बात नहीं मानेंगें तो मैं युनियन में आउंगा।

सलीमः देखो युनियन में तो इसके लिए बात की जाती है कि किराया बढाना है, कम करना है, या फिर पुलिस को क्या चलान देना है और आज आप इस तरीके से बात कर रहे है।

मुन्नाः वो सब होता था, होना होगा, मगर आज के दोर में कुछ नहीं होगा। अरे युनियन में हमारा आदमी है। ठाकुर, अरे साले को जाके बोलूंगा ना तो, तुरंत बात हो जायेगी।

सलीमः (गुस्से) हा....हा.... मैं कल आ के युनियन में मिल लूंगा।

मुन्नाः आप आईये, युनियन में, मैं बात करता हूं।

शबानाः सुनिये, उनको आना होता तो वो आयेंगें। नहीं आना होगा, नहीं आयेंगें। आप..... आप.... जाईये यहां से।

मुन्नाः मुझे लगता है आप लोग गोधरा के बाद क्या हुआ सब कुछ भूल गये लगते है।

(सारे बस्ती के लोग डरके इकट्टा हो जाते है और गुन्डा केसरी पट्टी लेकर आता है और सबके सिर पर रखता है।)

----xxxx----